19/5/20

(1)

B.A. Part III
Hindi Hons
सगुण भक्ति काव्य

भ्रमरगीत

डॉ० अरविन्द कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
(हिन्दी)
एस०एस० कॉलेज
जहानाबाद

Ques – 1 'भ्रमरगीत' शब्द की व्याख्या करते हुए इसके उद्भव और विकास पर प्रकाश डालें। साथ ही साथ भ्रमरगीत परम्परा में सूर के भ्रमरगीत का स्थान निरूपित करें।

Ans – भ्रमरगीत एक यौगिक शब्द है। यह दो शब्दों - भ्रमर और गीत के योग से बना है। कहने की आवश्यकता नहीं कि भ्रमर को भौंरा, मधु, चञ्चरीक, द्विरेफ, भृंग आदि भी कहते हैं। यह काले रंग का कीट होता है। इसके षट्पद होते हैं। गान का अर्थ गीत होता है। इस प्रकार भ्रमरगीत का सामान्य अर्थ, शाब्दिक अर्थ, अथवा अभिधार्थ हुआ - भ्रमर का गीत। लक्षणा के द्वारा इसका अर्थ हो सकता है - भ्रमर सम्बन्धी गान अथवा भ्रमर को लक्ष्य करके लिखा गया गीत।

उपर्युक्त अर्थ तो सामान्य कोटि का है, परन्तु हिन्दी काव्य में भ्रमरगीत शब्द का प्रयोग एक विशेष अर्थ में किया जाता है। इसका सम्बन्ध कृष्ण, उनके ज्ञान, गुरु सखा उद्धव तथा ब्रज के गोप गोपियाँ खासकर गोपियों से है।

यद्यपि भ्रमर को उपलक्ष्य करके उपालम्भ देने की परम्परा का श्रीगणेश महाकवि कालिदास से मानना चाहिए, जहाँ दुष्यन्त की प्रथम रानी हंसपादिका शकुन्तला के प्रेम में आबद्ध राजा दुष्यन्त को भ्रमर विषयक उक्ति द्वारा उपालम्भ देती है। पर भ्रमरगीत का मूल उत्स श्रीमद्भागवत का 46वाँ और 47वाँ अध्याय है। यहाँ कृष्ण द्वारा प्रेषित उद्धव ब्रज में आते हैं और नन्द यशोदा आदि से कृष्ण के ब्रह्म स्वरूप का प्रतिपादन करते हैं। भगवान के निर्विकार अनादि अनन्त और सर्वगत रूप का निवेदन करके वे नन्द

पेज (2)

क्रमशः

और यशोदा आदि को उनके इसी स्वरूप की प्राप्ति के लिए ज्ञान का उपदेश देते हैं। बाद में गोपियाँ उन्हें एकान्त में ले जाती हैं। इसी बीच एक भ्रमर घूमता हुआ वहाँ आ पहुँचता है और गोपियाँ भ्रमर के बहाने उपालम्भ करना शुरू कर देती हैं। उनका इस प्रकार का उपालम्भ ही भ्रमर गीत के नाम से प्रसिद्ध है। भागवत में भ्रमरगीत की यही कथा हिन्दी साहित्य के भ्रमर-गीतों की आधार शिला बनी। किन्तु समय के अंतराल कवि प्रतिभा और परिस्थिति ने इस मूल कथा में बहुत कुछ जोड़ा। भ्रमर-गीत तत्कालीन चेतना को निरखने-परखने का सम्बन्ध बना। भागवत के इतिवृत में भाव की हार्दिकता उभरी। सूरदास तथा नन्ददास के भ्रमर-गीतों में ज्ञान, योग तथा भक्ति तथा सगुण-निर्गुण का वाद-विवाद है। वह भागवत में बिल्कुल नहीं है। भागवत में उद्धव ने कृष्ण का जो संदेश गोपियों को दिया है, वह मनोनिग्रह पूर्ववत् भक्ति का है पर वहाँ ज्ञान का खंडन नहीं है। उद्धव ने जो कुछ कह दिया उसे गोपियों ने सिर माथे लिया। गोपियाँ कृष्ण की वियोगिनी हैं, उद्धव उन्हें कृष्ण की सर्वव्यापकता का संदेश देकर तुष्ट कर देते हैं। गोपियाँ बोलती तक नहीं, पर सूर और नन्द की गोपियाँ यहाँ तक बोलती हैं कि उद्धव की बोलती बन्द हो जाती है और प्रेमी उद्धव बन जाते हैं। यहाँ स्पष्ट ही ज्ञान मार्ग और निर्गुण का खंडन करके प्रेम-लक्षणा भक्ति की स्थापना की गयी है।

अध्ययन सौकर्य की दृष्टि से भ्रमर गीत की परंपरा में आने वाले कवियों को दो भागों में बाँटा जा सकता है पहला ग्रंथकार कवि तथा दूसरे मुक्तक रचना करने वाले कवि। इसे तालिका द्वारा इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है —

भ्रमर गीत की परम्परा

ग्रंथकार कवि (भक्तिकाल)	मुक्तक कवि (भक्तिकाल)
1. सूरदास (भ्रमरगीत)	1. तुलसी
2. परमानन्द दास (परमानन्द सागर)	2. रहीम

क्रमशः